अर्थ

पुरुषार्थ वर्ग में द्वितीय स्थान अर्थ का है। यह भौतिक उन्नति की प्राप्ति का साधन है। संसार में सभी व्यक्ति सांसारिक सुख-भोगों की सामग्री जुटाने के लिए अर्थ की अभिलाषा करते हैं। अत: इसकी व्युत्पत्ति करते हुए कहा गया है- “अर्थ्यते सर्वे: इति अर्थ:' अर्थात् अर्थ वह अभिलाषित वस्तु है, जिसे प्राप्त करने की सभी कामना करते हैं।' अर्थ शब्द यद्यपि अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है तथापि पुरुषार्थ के अन्तर्गत यह जीविकोपार्जन से सम्बद्ध है। जिसके द्वारा मनुष्य न केवल अपनी भौतिक आवश्यकताएँ पूर्ण करता है, वरन् धर्म व काम रूप पुरुषार्थों को भी सिद्ध करता है। अत: कुछ विचारकों ने त्रिवर्ग में अर्थ को अधिक महत्वपूर्ण माना है।"

अर्थोपार्जन की वृत्तियाँ

अर्थ के महत्व के कारण ही भारतीय मनीषियों ने वर्ण-व्यवस्था में गति दिखाई देती है, उसका कारण यही 'काम' पुरुषार्थ है। प्रेरणा प्रदायक विभिन्न वर्गों की वृत्तियों का समुचित वर्णन किया है। शुक्राचार्य ने भी विद्या, शूर-वीरता, दक्षता, बल, धैर्य, मित्र, सहज से अर्थप्राप्ति की बात कही है। महाभारत में कृषि, वाणिज्य, गोरक्षा, विविध शिल्प आदि को अर्थ के साधन पशु, के रूप में निरूपित किया गया है। वात्स्यायन ने विद्या, भूमि, स्वर्ग, धनधान्य, बर्तन, मित्रादि को अर्थ कहा है। मनु ने भी अर्थोपार्जन के साधनों में दस साधनों को विशेष महत्त्व का माना है— विद्या, शिल्प, नौकरी, सेवा, पशुपालन, व्यापार, कृषि, धैर्य, भिक्षा और व्याजा" अर्थोपार्जन के विशेष साधनों की चर्चा करते हुए ऋत, अमृत, मृत, प्रमृत, सत्य तथा अनृत नाम की वृत्तियों का अनुमोदन किया है।"

ऋत - उञ्छ एवं शील ऋत है,

अमृत - किसी से कुछ न मांगना,

मृत - मांगकर (भिक्षा) अर्थोपार्जन की वृत्ति मृत है,

प्रमृत - कृषि कर्म को कर्म वृत्ति कहा जाता है,

सत्यानृत - वाणिज्य व्यापार सत्य है,

शवृत्ति - सेवा कर्म शवृत्ति है।

अर्थविषयक विवेचन से स्पष्ट है कि जीवन-निर्वाह की आवश्यक सामग्रियों को धर्मशास्त्रियों ने अर्थ पुरुषार्थ में सम्मिलित किया है और मानव के लिए उनकी महत्ता को भी स्वीकार किया है।

Lecture by-

Dr. Ritu Mishra,

Department of Sanskrit,

Shivaji College